



१ॐ नमः श्री वज्रसूत्राय ॥ ॥ सिंधुवार्धनविधिमाह ॥ थनमालकाथय
नायाय ॥ कलगः गणगः महाकालः सग्वनः ॥ गणसः कसकः सिद्धम् महति
पञ्चपात्रः पञ्चगव्यः वाक्काथिः किर्तिकलसः सिद्धवसधुलः मतः
दिगवलि ॥ थूतिथायनायायधूनका ॥ २ ॥ सूर्यार्घ्यः पुन्यादाद्यकाय
॥ थनमाला सतस्रककुसुम ॥ पञ्चगव्यः ॥ थनयाय ॥ कायवियधूनका ॥
ऊऊमानयातपूजाहलसंकल्पयाक ॥ ॥ थनदवस्वपूयनः स्वरावप

जायाय ॥ धूनकाउ ॥ नालपूजा ॥ ललाधपूजाः विसर्जनः ललाझाय ॥ नाः
लललाझाय ॥ आदिसमयआगतयक ॥ गुनवाक्यनिरुक्तथंथाकाय ॥
भाउयाय ॥ पुनमश्रीवक्रसंस्त्राय ॥ ॥ आदितासनसंस्थापिः कल्या
धमकूटकल ॥ आलिकालिसमागागः समन्त्रयत्रमग्नव ॥ ॥ गीत
मृगुगुगावन ॥ ॥ गुनमधुलः लखवलि विसर्जन सिन्धुपूजा ॥ ॥
थनसिद्धिसमयवियक ॥ बहस्यमधुलदनक ॥ भाउयाय ॥ ॥ गीतमृ

नील ॥ ॥ विसमाधिदन ॥ कलगपूजा गरुगः महकाल सरमान रगाश
सक्रसक सिद्धम मरु थुनिपूजा ॥ जाय धूप निनाजन मरु नालवा ॥ ॥
गीतकलगवन ॥ ॥ थनवान्धिपूजा ॥ ककायक ॥ ध्यान ॥ पुं कींकावय
मराजनः रुद्रमाकात्रमामकीः यश्च वृद्धस्त्रपिदी ॥ पुं रुंजांकींखंशुक्रक
पीरुनत्तमवर्कदिहृजाः वज्रहृताः संप्रकथा गनद्वीरु रुंयश्च ॥ मं
पाउरय ॥ पुं आरुंरुहाकीं मृखंखाहा ॥ वाक् ॥ पुं सर्वहृका मिनीः सर्वरु

[illegible]

वक्रावन्मृगकाकात्रि निर्विकल्पस्वप्निधी ॥ सदेववन्द्यादवीः ॥ गोत्रीमाधन
भासुत ॥ तर्क्य ॥ समयभाला मतेः यधर्मा ॥ वलि ॥ ॐ श्री १ इन्द्रायः
सर्वयक्रनाकसः रुद्रप्रतिपिभो वः जाकजाकिनी सहित ॐ देवतिगुरु १ इन्द्र
ट्स्वाहा ॥ ॥ रुद्रनृपतिभ ॥ ॥ तस्माय ॥ ध्यान ॥ रुद्रवाकात्रेयवात्रधि
मृगनाहस्वप्निधी ॥ ॐ कात्रनसमृत्यन्ना पीतद्विरुजकमूरं ॥ पञ्चमूडा
सुगण १ इन्द्रकहिंस्वत्यत्रधनिशं ॥ वात्रधसुस्थितादवीः विराय १ वात्रिया

मिथी ॥ ॥ गीतवक्रवर्ध ॥ ॥ मंडपात्रतय ॥ ॐ श्री १ इन्द्रहात्री मूरं
स्वाहा ॥ ज्ञापः धूप निवाजन मरुतः नालवा ॥ ॥ मंडपात्रतय ॥ ॐ सर्वरु
क्रका मिनीः सर्वरुक्र १ गोदिनी गुप्तवक्रिणीः काध्वत्रीः सर्वद्रव्या १ अधयद्रु ॥
वीजनय ॥ ॐ मृग १ मृगप्रवगथं ॥ वज्रथिय ॥ ॐ इन्द्रसंस्तुता ॥ ॥
स्वावशुद्धा ॥ पादार्चनय ॥ ॥ रुद्रवशी मरुत्री १ मृगनाहस्वप्निधीदवी
रुद्रनकायपाद्यप्रतिष्ठस्वाहा ॥ ॥ स्नानवाय ॥ ॐ श्री वात्रिया मिनी यनम

१ स्वाहा ॥ ॐ नमो वरुणाय नमः १ स्वाहा ॥ ॐ नमो वीरु सखवाय नमः १ स्वाहा
ॐ नमो नां कालाय नमः १ स्वाहा ॥ ॐ नमो मिताह स्वत्रयाय नमः १ स्वाहा ॥ ॐ नमो नः
नमः १ स्वाहा ॥ ॥ पूजा वास्या नाश ॥ ॥ ॐ नमः १ श्री वाप्रिया गिरधे
॥ नमो वरुणा कात्रि निर्विकल्प स्वत्रयिणी ॥ वात्रिव न प्रदादवीः निष्प्रमानं न
मास्य हं ॥ नमः ॥ समय धारा मन्त्र धर्मा ॥ वलि ॥ ॐ नमः १ इन्द्र प्रहिकाय स
र्वयक्राक सखरु प्रकपि गाय जकिनी सहि न ॥ द वलि गुरु १ इन्द्र स्वाहा

॥ ॥ नमः १ उग्र ॥ ॥ नमः १ ध्यान ॥ ॐ नमो वरुणा नमः १ जकिनीः नमः
घमिद्वि स्वत्रयिणी ॥ नमो वरुणा समुद्र नाः नमः १ इन्द्र कात्रि ॥ इन्द्र कर्मा
कपाले वमः १ पञ्च विरुषणी ॥ कोत्र व सखि नादवी ला वद्वज्जकिनी ॥ ॥
मी नमः १ वरुणा ॥ ॥ जप धूय निवाज नमः १ नमः १ नमः १ मनुपात्र
य ॥ ॐ नमः १ इन्द्र हाजी नमः १ स्वाहा ॥ ॐ सर्वरुका मिनी सर्वरुका गोदिनी शु
क्वजिनी काश्चित्रीः सर्वद्वारा गाय धर्मा ॥ वीरु नमः ॥ ॐ नमः १ नमः १ नमः १

प्रवर्गयद्गं॥ वज्रं थिय॥ ॐ शं घं सं दं स्वाहा॥ ॥ स्वरावशुद्धा॥ पादार्घ्यनय
॥ ॥ हगवन्थीमरुथी २ मृमाघसिद्धिस्वत्रूपवात्रुथीद्वीरुदात्रकायपाशं
प्रतिरुखाहा॥ स्वानवाय॥ ॥ ॐ वज्रजकिदीयनमः स्वाहा॥ ॐ हवित्र
वर्हयनमः स्वाहा॥ ॐ ॐ कात्रवीजसंरुवायनमः स्वाहा॥ ॐ मृमनाकाला
यनमः स्वाहा॥ ॐ मृमाक्रसिद्धिस्वत्रूपायनमः स्वाहा॥ ॐ मृमनन्दनमः स्वा
हा॥ ॥ पूजा-नाम्ना-नाड॥ ॥ ॐ नमः श्रीवज्रजकिरुधे॥ ग्धमात्र

मृग्धमाकात्री-निर्विकल्पस्वत्रूपिणी॥ जकिदीवत्रदाद्वी-सगाद्यस्थानमरु
त॥ नत्पन॥ समय-धला-मरु-यधर्मा॥ वलि॥ ॐ मृमा १ दं प्रतिकाय सर्वयक्र
वाक्रमः रुरुप्रकपिभवजकिनि-सहि १ ॐ दं वलिगृह २ दं रुद स्वाहा॥ ॥
ॐ तिक्रमपूजा॥ ॥ यनमहनिसाधनयाय॥ ॥ ध्यालिआपाडपू
जा॥ ॥ नकाय॥ ध्यान॥ प्रथमं तावत्संजीमभनादोवीजांप्रदशमिस्त्वा
नवकात्रमध्वं गुह्यतमध्वपकात्रयप्रियाभनविश्वयमववटक-मध्वलंका

प्रद्यःसूर्यमधुलं वक्रवर्धं वक्रयागिणीं रावय ॥ १ ॥ जाय धूय निनाजनः
मकर मालवा ॥ ॥ गीत गोरुदह ॥ ॥ प्रकृतेन प्रिकाय वाय ॥ ॐ श्री १ हं ॥
मनुपाय कय ॥ ॐ सर्वजकजकिन्पापाड सर्वा सय हं रुद्र ॥ ॐ वं श्रीं जिं खं हं ॥ वरु
काय वाय ॥ ॐ श्री १ हं ॥ हहा जीं श्रीं खं स्वाहा ॥ ॥ स्वराव शुद्धा ॥ पादाय कय ॥
ॐ श्री १ श्री मन्त्री २ वक्रकनाटकस्य १ पाशं प्रहिक स्वाहा ॥ ॥ स्वान वाय ॥ ॐ ३
सर्ववृद्धजकिनीय वक्रवर्धं पीय वक्रवेनावनीय हं रुद्र स्वाहा ॥ ॐ श्री १ हं रुद्र

स्वाहा ॥ ॐ वक्रकनाटकाय स्वाहा ॥ ॐ समयकनाटकाय स्वाहा ॥ ॐ विस्मयकना
टकाय स्वाहा ॥ ॐ समयविस्मयेकनाटकाय स्वाहा ॥ ॐ श्री नन्दाय स्वाहा ॥ ॐ यत्र
मानन्दाय स्वाहा ॥ ॐ वीरमानन्दाय स्वाहा ॥ ॐ सहजानन्दाय स्वाहा ॥ ॥
पूजा नास्या नाय ॥ ॐ नमः १ श्री वक्रयागिरये ॥ शून्यतां कत्रुतात्मानं कुंधातु
कनमस्तुते ॥ कलकल्याणि कजानमस्तु वक्रयागिनी ॥ ॥ तस्य नमः ॥ समय
धाता मरु ॥ यधर्मा ॥ बलि ॥ अकाला मुख सर्वधर्मा रक्ष मायं नृप नृणां मां

वलिगृह २ रुद्र स्थाहा ॥ धूम्रपाद प्रजा ॥ ॥ धनकीर्तिकलश प्रजा ॥ ॥
नकाय ॥ ध्यान ॥ पुनर्पितृगुण्यतां वयं ॥ श्रीकां प्रदाय महां जन मां मकी न
कादिरुजावजघरुका रुकां प्रदा ॥ श्रीकाये कसुवर्धुदिरुजं वयं ॥ ॥
गीतलानुमधुन ॥ ॥ जाय धूप निनां जने मनेह मां लवा सुगनं नाय ॥ ॥
मं तु पादकय ॥ ॐ हहा जी १ मुखं स्थाहा ॥ बीजकय ॥ ॐ श्रीमह १ श्रीमह प्रवम
यं ॥ ॥ स्थावरा ॥ पादार्चकय ॥ ॥ रुगवन् श्रीमन् श्री १ मां मकी

दवी हृदा न कस्य १ पादं प्रनिक्ष स्थाहा ॥ ॥ स्थावराय ॥ ॐ मां मकी दये नमः
स्थाहा ॥ ॐ पुनर्गती दवी नमः स्थाहा ॥ ॐ हवजं स्थाय स्थाहा ॥ ॐ नमहि वेश
वनाय स्थाहा ॥ ॐ स्थाहा रुं यमनृप श्वराय स्थाहा ॥ ॐ वासं हवत्तु सं वय
स्थाहा ॥ ॐ रुं रुं हावजं सूर्याय स्थाहा ॥ ॐ रुद्र २ यत्र मां श्वराय स्थाहा ॥ ॥
प्रजा प्राणा नाय ॥ ॥ प्रकृवंधु कसकाभा नाहि मध्यावस्थिना खभातो उस्ति
ना दवी नमा मिहान नृपिनी ॥ नत्यन ॥ वलि ॥ श्रीकाला मुख सर्वधर्मा सं मायः

धर्मरत्न द्वात्रिंशत् पुरा श्री महाविहार

DH 29

११७

हा॥ ॐ किं मा हनी यं रुद्र स्वाहा॥ ॐ क्रीं क्रीं संद्रासनी यं रुद्र स्वाहा॥ ॐ
रूं रूं संद्रासनी यं रुद्र स्वाहा॥ ॐ रुद्रं वदितुं काये रुद्र स्वाहा॥ **वटकाक्ष**
॥ कला मयूषी २॥ ॥ ॐ अडित्या नयी भय स्वाहा॥ ॐ पुनगित्रीयी भय
स्वाहा॥ ॐ श्री हनुयी भय स्वाहा॥ ॐ कामरूपी भय स्वाहा॥ ॐ जालंधरीयी भय
स्वाहा॥ **कला मयूषी ३॥** ॥ ॐ चरुगुहाय रुद्र॥ ॐ गहावगाय रुद्र
॥ ॐ काला कलाय रुद्र॥ ॐ कलंकरीषाय रुद्र॥ ॐ मृदहासाय रुद्र

॥ ॐ लक्ष्मी वक्षीय रुद्र॥ ॐ धात्राधकालाय रुद्र॥ ॐ किलिंकलाय रुद्र
॥ **॥ धनधलमधुलथिल॥ धानासुतनाय॥ यथायथा प्रजापतये॥**
समय धाला मत यधर्मा॥ ॥ **॥ ॐ नमः श्री वज्रवानाक्षे॥** नलां श्री वज्रवाना
क्षे सर्वपापप्रभायनी॥ मानविधं सनी दुर्वी वृद्धत्वं रुद्रदायनी॥ **कल्पन॥ ॐ**
मृगारुद्र॥ ॐ ॐ ॐ रुद्र॥ ॐ उउ रुद्र॥ ॐ मृमृ रुद्र॥ ॐ ॐ रुद्र
॥ ॐ उउ रुद्र॥ ॐ अउ रुद्र॥ ॐ मृमृ रुद्र॥ ॥ **धनवत्सुगनंति**

वक्र॥ ॥ अथ निगच्छाय ॥ सिरुल्लय ॥ वलि ॥ अकाला मुख ॥
॥ ॥ यत्नमाया वक्र नाड्याय ॥ ॥ अंनमः श्रीवक्रवा नाधे ॥ ॥
माया वक्रस्थितायाः कलदनत्रसिखाविश्रुताकालत्रया ॥ दग्धाभाशी सम
नाः समविषमगतेः स्कन्दवक्त्रे ॥ समाहे ॥ १ ॥ रुका नदावयित्वा स
मविषमसमा रुदविन्वा विहिन्या ॥ निस्यन्ता दे समका सहजस्व नृपिः
निर्णवना देवसंघे ॥ २ ॥ पादवी दिव्य नृपी प्रियवतजननीः सर्वहा

वाविहिन्या ॥ उकाभकस्वहावा जगदखिलमिदं व्यापिधीवृद्धमाता ॥ ३
॥ पादेषु स्यात्प्रथम्यः प्रकृतिगुणयसाः रूपममूककमा ॥ रुद्रकालनादे
किलिकलनलवे ॥ रुद्रवनालवन्दे ॥ ४ ॥ हाहाहा अहहा मे देवि गतसक
ले ॥ मन्त्रलोकसनागे ॥ सिद्धिनमः प्रसिद्धे ॥ मनिवन्सहिर् ॥ सुलोकस
वन्दे ॥ ५ ॥ लां देवी हीमनूपाः सकलरुयहवा रुद्रवन्दे ॥ समाहे ॥ पा
नो यस्य कनाटः शक्तिवधवन्तः कर्त्तिका स्याहस्त ॥ ६ ॥ प्रणवराजि

भजाः मद्यमद्य किमद्यः घर्घनीघात्रनादे ॥ त्रकाङ्गिहास्यवक्ताः ललि
 टनसनगः रीमनादासुरभासा ॥ १ ॥ गङ्गांशसदायीः सकलपुष्टानि
 विभाहवित्रानमस्य ॥ यासासिधुप्रवर्धः प्रिरुवननमिताः साद्वयर्षक
 नृपा ॥ दवीरुतासुत्रडाः तनकत्रिकनगः जसिनीनागलाका ॥ ६ ॥ मधु
 मालोगनार्धः त्रविमुखगतिताः मूककगाप्रिभजा ॥ वंददवीसदावेः विप
 हनकिंकमाः विश्वमूर्धिकनृपा ॥ ९ ॥ **ॐ तिथी वज्रवानाहिद्वयाः शमाया**

वज्रकांडसमाप्तं ॥ ॥ ग्वयग्वालशहलप ॥ ॥ हनकग्वलकनक
॥ ॐ नमः श्री वज्रवानाके ॥ त्रकाङ्गसमासिनीः सहजानन्दकनूषिनी ॥ प्र
 हाहानदहारग्रनमस्तु वज्रयागिनी ॥ १ ॥ विविजदिप्रमादनः चतुः
 नानन्दराहदनामपात्रमितापाकः नमस्तु वज्रयागिनी ॥ २ ॥ गत्रः
 त्यर्धहसकारभः साक्षाद्वज्रयागय ॥ वर्तुगुवीरुसंरुतः नमस्तु वज्रया
 गिनी ॥ ३ ॥ नागनागमयाभसंभकवज्रयवर्जित ॥ महाबागसखाध

५ नमस्तु वज्रयागिणी ॥ ४ ॥ रावाला वज्रयागी ॥ ५ ॥ शत्रुनाशक मधुवर्जि
॥ ६ ॥ स्वर्गलाभ विनिर्मुक्त नमस्तु वज्रयागिणी ॥ ७ ॥ सत्त्वार्थकत्रसंयुक्त
जातसंज्ञागत्रयिणी ॥ कन्यावक्तृदहस्त नमस्तु वज्रयागिणी ॥ ८ ॥
रुवनिर्वाणमात्रुः नृपाकात्रविवर्जि ॥ कायवाक्चिदहस्त नमस्तु व
ज्रयागिणी ॥ ९ ॥ वामकपालखत्वाङ्गदक्षिणैकर्मिधायिणी ॥ भूतपूजा
कन्यावाह नमस्तु वज्रयागिणी ॥ १० ॥ जिनशरीरविरुद्ध सर्वमात्रनि

सूदनी ॥ निर्जिह्वागत्रयशृङ्ग नमस्तु वज्रयागिणी ॥ ११ ॥ कनाकत्र
यसंयुक्त भग्नानाककवासिणी ॥ वृद्धनाकसंयुक्त नमस्तु वज्रयागिणी
॥ १२ ॥ संज्ञासंज्ञप्रवर्धन निर्मितामकत्रयिणी ॥ भगमायीतात्रसाहास
नमस्तु वज्रयागिणी ॥ १३ ॥ यशस्वकलायवा यशसागिनिताय ॥
कथायजमानसंयुक्त नमस्तु वज्रयागिणी ॥ १४ ॥ गिवगकिमितिनाक
किर्थावकिप्रिकल्पय ॥ दाक्षदेवकिजाफ नमस्तु वज्रयागिणी ॥ १५ ॥ कू

लाघकृदिकाकाकः आत्मासावेष्टुवीशानः ॥ विश्वत्रयीक्रियाकालनमस्तु
वज्रयागिणी ॥ १४ ॥ संप्रभविजयीमाता वाजलक्ष्मीददातिव ॥ महामाः
गारुगवतिद्वी नमस्तु वज्रयागिणी ॥ १५ ॥ सत्वदृष्टिविशेषधः गताः
भक्तविक्षयनी ॥ गगनक्षयनिपाता नमस्तु वज्रयागिणी ॥ १६ ॥ ग्ध
मापीतादिनिर्मला वर्णावर्धु विनिर्जित ॥ प्रहापात्रमितामाता नमस्तु
वज्रयागिणी ॥ १७ ॥ निर्विकल्पनिग्राहसु निष्प्रयश्च निग्राह्य ॥ वि

श्रवापिरुनेनात्म्य नमस्तु वज्रयागिणी ॥ १८ ॥ सर्वसर्वदिशक्षणाः ऊ
तनीसर्वयागिणी ॥ नमस्तु वज्रवाजाहि नमस्तु वज्रयागिणी ॥ १९ ॥ स्व
तारगुणमूखाका ऊर्तिगीताहानत्रयिणी ॥ ममाहानविनासाय नमस्तु व
ज्रयागिणी ॥ २० ॥ ॐ किगुशयूगतामाहु द्विविधानकयूरुह्य ॥ दक्षवा
नाताहुर्नरुह ॥ हानसहासुह ॥ २१ ॥ ॐ कित्रीतागहनपादविन
चिरवज्रवाजाहिनाहुं समाफ ॥ ॥ धनमधुलदग्नयावक ॥ ॥

दक्षिणा नयकः ॥ ॥ बहुसंगतं त्रियः ॥ गुणप्रमुखं कुरुमानयनिसकल
 पातं नीचकः ॥ ॥ प्रहसमयवियः ॥ ॥ थुतिधनकाऽ ॥ वायुप्रजा ॥
 गुणप्रजा ॥ पञ्चवृक्षस्वयं न प्रजा ॥ वलि ॥ नृकाला मुखः ॥ ॥ थ
 नलि ॥ नृकायः ॥ दशप्रजा ॥ दशस्वयं न जायः थुयः निगोजनः मरुः गाल
 वाः संगतं स्वयः ॥ ॥ गीतनमरुकायः ॥ शीवकः ॥ ॥ स्वरावगुहा ॥ पा
 दायः ॥ ॥ दशस्वयं न स्वानवायः ॥ ॥ प्रजा नारायणः ॥ ॥ कर्पनः ॥

वलि ॥ नृकाला मुखः ॥ ॥ थनरुलमासः मामागुहाल ॥ ॥ थन
 वाकप्रजा ॥ दिगुवलि वियः ॥ ॥ गीतुं नृकाऽ ॥ ॥ स्वानकिरुनः ॥ गु
 नप्रजा ॥ दक्षिणा ॥ दिगुसमयः ॥ कुरुमानयनः ॥ संगतं नारायः ॥ सिंधूत्रमधुल
 नारायः ॥ कलगाहिषकः ॥ गुहाहिषकः ॥ सिंधूत्रमधुलविगर्जनः ॥ वज्र
 का ॥ शक्तिनयः ॥ सिंधूत्रः ॥ मारुनी नारायणः ॥ ॥ गुणप्रमुखः ॥ सकलपातः
 निवकः ॥ स्वाय नारायणः ॥ पञ्चपातलगाहायः ॥ विद्वियकः ॥ अपिल

अज्ञाय ॥ ॥ थनय नृपमखं सकलयां ॥ खाय ज्ञानगकाय ॥ ॥ गी
 नरुहं ह ॥ वकीकधुल ॥ खाय लिज्ञाय ॥ ॥ थनमेमयावकु ॥ विगर्ज
 न ॥ कलगत अज्ञाय ॥ कसकं सिद्धल अज्ञाय ॥ गद्यम महकाल ॥ गायम
 नयकल काय ॥ राजनादि ॥ ॥ ॐ किं श्री सिन्धु नार्जन विधिसमायं ॥
 ग्रहं ॥ ॥ सम्वत् १०२१ मिनि मार्ग शिलक वृया घसूमी घन सफेमी ॥
 अकवानः थषू थषू कअय सिधयकादीन रुल ॥ ॥ रुनवकुरुम

हाविहात्रयाः श्रीवजाचार्य आसामइनं थषू कथ अरुदयका रुल ॥
 लिखितं चूकवाहालया श्रीवजाचार्य नीलदहनं थषू कवाया रुल ॥
 थषू कसनानला रुयायमइरुल ॥ ॥ अहमसु सर्वदा ॥ ॥

नाय
पातास
धं धूपाय
गुगु
सिद्ध
आससिद्ध

महि
कमुन
कधुन
ओखशु
गील
ॐकायका

सिद्ध नावा
सिद्धाकल
वधि वधि
गम गवय
साइइ
धल कलि साय

दाहोत्ता कचा
कि सति
पंवसुप्रका
नकसुप्र
नीलसुप्र
काउकाय

चलाला
हिरला
खं
का
ला

महनि क्रमकं सगं कलस रगाग्रम सिद्धम् थपिं राय

ति जे
च. का
ला. का



मगुल



क मला



